"एक तरफ तहखाने की सीलन भरी दीवार तो दूसरी तरफ मानव सभ्यता के विकास की गवाही करती मृणामूर्तियां, मदभाण्ड मिट्टी के मोहरों, डिजाइनों की नाना प्रकार की आकृतियों का अनोखा संसार। डॉ.जगदीश गुप्त ने पिछले 40 वर्ष से टेराकोटा संग्रह का जो अभियान छेड़ा उसकी उपलब्धि आज यह है कि फिलहाल किसी राजकीय संग्रहालय में टेराकोटा का इतना बड़ा संग्रह नहीं है"।

टेराकोटा का अद्भुत संग्रह और डा0 गुप्त का तहखाना

अपनी पैतृक स्थली शाहाबाद (हरदोई) की जमींदारी से मुक्त होकर दारागंज की गलियों और नागवासुकि के सानिध्य का आनन्द उठा रहे डॉ.गुप्त अपने ही संग्रह पर मोहित और भावुक भी हैं। डॉ.गुप्त ने जिस तरह से एक-एक आकृति की भाव-भंगिमा, मुद्रा, अलंकरण, उसकी खूबियों और कालखण्ड की व्याख्या करते हैं उससे वही लगता है कि कला के प्रति समर्पण और चेतना वास्तव में समाज के लिए संभावनाओं के कई द्वार खोल सकती है।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में डॉ.जगदीश गुप्त का नाम अनजाना नहीं है। डा0 गुप्त साहित्य सर्जना के साथ ही अपने चित्रों, रेखांकनों के लिए भी चर्चित रहे हैं। उनकी इन्हीं उपलब्धियों को देखते हुए पिछले दिनों उन्हें भारत-भारतीय का प्रतिष्ठापरक सम्मान भी दिया गया मगर बहुत कम लोग मानते होंगे कि डाक्टर गुप्त के आवासीय तहखाने में लोक कलाओं की थाती टेराकोटा का अद्भुत संग्रहालय भी है।

जब आदमी सभ्यता के दौर में कोई भाषा नहीं थी, अभिव्यक्ति का कोई माध्यम नहीं था, तब रेखाओं, आकृतियों, आखेट चित्रों के माध्यम से समाज के विकास की प्रक्रिया शुरू हुई। रेखायें समझ में आयीं तो मिट्टी के उपयोग से सभ्यता के प्रथम पात्रों, बर्तनों व मूर्तिकला के गर्भावस्था की अवस्था का निर्धारण हुआ। हड़प्पा और मोहन जोदड़ो की खुदाई के बाद सिन्धु घाटी की जो सभ्यता सामने आयी उसने दुनिया को बताया कि हजारों वर्ष पूर्व लोग किस तरह रहते थे, क्या खाते थे, कैसे रहते थे। वह समाज कितना उन्नत था यही जानकारी उत्खनन में प्राप्त मृद भाण्डों, मृणमूर्तियों, मिट्टी के मोहरों व सिक्कों से मिलती है।

इसी पहचान के आधार पर डॉ.गुप्त बताते हैं कि शाहाबाद का इतिहास अभी तक नहीं लिखा गया मगर यहां की सभ्यता काफी उन्नत रही होगी। मिट्टी की आकृतियों में कई चेहरे ऐसे हैं जिनकी शक्ल यूनानी राजाओं, रानियों से मिलती है। हैट लगाये अंग्रेज मेम, खरीद-फरोख्त की मुद्रा में खड़े व्यक्तियों की शक्ल मुगल कालीन समय के तिजारती लोगों से मिलता है।

प्राचीन समय में ब्लाक प्रिंटिंग की तकनीकी को समझता, मिट्टी के ठप्पे, देवी-देवताओं की शक्ति को निरूपित करता गज सिंह, गज लक्ष्मी, मौर्यकालीन संस्कृति रीति रिवाज, वेशभूषा व धार्मिक कर्मकाण्डों की कहानी बताती मूर्तियां, महात्मा बुद्ध के जमाने का प्रतिबिम्ब दिखाती-इबारत लिखी पत्थर की आकृतियाँ, पुराने जमाने में युद्ध का खाका खींचते हथियार, औजार व संकट मोचन देवी-देवता तथा बहुतेरे वंश व काल में चलने वाली परम्पराओं को प्रतिमाओं के जरिये अवगत होने की यहां (संग्रहालय) भरपूर सामग्री हैं।

कुछ आकृतियां तो इतनी दुर्लभ किस्म की है कि यह बामुश्किल देश के किसी संग्रहालय में इस वक्त मौजूद होंगी। इनमें यक्षणी, शुकरी, सप्त मात्रिकायें ढक्कन के अन्दर पशु पंक्ति नारी आवृति, आरनामेंट स्टाइल विशेष तौर पर उल्लेखनीय है। हजारों-हजार वर्ष पूर्व निर्मित ये प्रतिमायें आज भी इस कदर सजीव है कि नहीं लगता कि ये मिट्टी व पत्थरों पर तराशी गयी है। कुछ मिथुन आकृतियां तो अदभुत हैं। इसके द्वारा विभिन्न कालों में स्त्री-पुरूष के मिलन और प्रेम के बहुआयामी स्वरूप की झलक मिलती है। मिट्टी की बनी बच्चे को दूध पिलाती शुकरी की मूर्ति और अशोक का डाल झुकाये अपने प्रेमाकुल मन की दशा बताती गोरी दोहद परम्परा की निशानी है। इसी परम्परा से जुड़ी ढक्कन के अन्दर पशु पंक्ति (आत्मा) मन में छुपी बुराइयों की ओर इशारा करती है। वस्त्रों की छपाई कब और कहां से शुरू हुई यह तो शोध का विषय है मगर वस्त्रों की छपाई के लिए ठप्पे के रूप में सर्वप्रथम मिट्टी की ही ठप्पे बने होंगे। इसके बाद लकड़ी के ठप्पों का इस्तेमाल प्रचलन में आया होगा। शाहाबाद से प्राप्त डिजाइनर ठप्पों से तो कम से कम अभाव मिलता है। इन ठप्पों में हाथ से पकड़ने के लिए मुठिया भी है और डिजाइनें कमोवेश वही है और डिजाइनें वही है जिनका इस्तेमाल किसी न किसी रूप में अभी तक होता आ रहा है। वस्त्रों की छपाई से संबंधित करीब दर्जन भर ठप्पे डा0 गुप्त के इस संग्रह में शामिल है जो टेक्सटाइल, टेक्नालाजी और डिजाइनिंग के विद्यार्थियों का विषय भी बन सकता है।

इसी तरह आर्नामेंट डिजाइनरों के लिए ऐसी अनेक पुरातन काल के गहनों के डिजाइनें यहां संग्रहित आकृतियों पर अंकित है जिसकी मदद से वे बेहतर से बेहतर कुछ तरह की डिजाइने गढ़ और रच सकते हैं।

संग्रहालय में कुछ वैदिक देवी-देवताओं की भी आकृतियाँ हैं जिससे यह पता चलता है कि सम्यता के साथ-साथ धर्म में आस्था का विकास कैसे हुआ। उस काल का मानव कितना धर्मी अथवा अधर्मी था|गुजरे जमाने का समाज तीज त्यौहार व उत्सवों के मौके पर साज-सज्जा के प्रति कितना सचेत था, मनोरंजन के लिए वह किस-किस तरह के वाद्ययंत्रों का प्रयोग करता था। खुशी के साथ वह गमी को कैसे बांटता रहा। ऐसे अवसरों पर उसका पहनावा, ओढ़ावा, नाच, गाना तथा खान-पान जब कुछ इन आकृतियों से सिमटा पड़ा है। मिट्टी, पत्थर के गढ़े आर्नामेंट, श्रृंगार कर सजी संवरी औरत, हाथ में पक्षी

लिए यक्षिणी, हाथी पर सवार सिंह, दैनिक जीवन में उपयोग होने वाली वस्तुयें कुछ आयुधधारी मौजस्समें एवं ग्रीक परम्परा के खंडित, मृद् भांड डा0 गुप्त ने इस तरह सहेज और संजो कर रखे हैं जैसे वे उस काल के इतिहास को एक थाती के रूप में बनाये रखना चाहते हों कि भावी पीढ़ी भी इस अहसास को समझ सके कि आकृतियों की कला ही आज सभी कलाओं की आँख है।

टेराकोटा के लिए डा0 गुप्त ने अपने गृह नगर शाहाबाद लगातार 40 साल तक चक्कर लगाया। इस कार्य के लिए उन्होंने किसी सरकारी तंत्र आथवा संस्था का सहारा नहीं लिया। उन्होंनें अपने बलबूते पर इस क्षेत्र में एक ऐसी टीम तैयार कर दी थी जो इन पुरातत्व की आकृतियों को खोज ढूंढ कर रखता था। जब वे शाहबाद के दौरे पर जाते तो इन वस्तुओं को इकठ्ठा करके इलाहाबाद ले आते। यह क्रम नियमित रूप से चलता रहा। पुरातन काल की इन वस्तुओं की तलाश करने वालों को पुरस्कार के रूप में जो कुछ भी धनरशि इसके एवज में मिल जाती वह उसे खुशी-खुशी स्वीकार कर लेते।

डा0 गुप्त बताते है कि शाहबाद पांचाल क्षेत्र के अन्तगत एक ऐसी जगह है जहां पुरातन सभ्यता का अनमोल खजाना काफी बड़ी संख्या में छुपा है। वे इस क्षेत्र में अंगई खेड़ा का विशेष रूप से उल्लेख करते हैं। वे कहते हैं कि संभवतः अपने काल खंड के साकार रूप को देखने, समझने और समझाने का यहां भरपूर प्रयास हुआ है इसके कद्रदान भी यहां ज्यादा रहे हैं।

उस वक्त की संस्कृतियों, लोक कलाओं व परम्पराओं को जीवन्त स्वरूप दर्शाने के लिए यहां शिल्पकारों का बड़ा जत्था भी रहा है। वे कहते हैं कि कभी-कभी खुदाई के दौरान यहां मिट्टी-पत्थर के साज समान बनाने वाले उद्योग होने का भी आभास होता है।

लेखक:एस.एस.खान